ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 176-180
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

प्रभा खेतान का साहित्य एवं नारी संवेदना

डॉ0 शकीला बानो
डॉ0 कुसुम सिंह

विभागाध्यक्ष–हिन्दी विभाग, म.गाँ.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट सतना (म0प्र0) भारत

Received- 01.03.2022, Revised- 05.03.2022, Accepted - 08.03.2022 E-mail: vishnucktd@gmail.com

सारांशः – *नारी ह्रदय की कुछ ऐसी अनकही, अनबूझी अनुभूतियाँ एवं संवेदनाएँ होती हैं, जिन्हें यदि कोई सटीक अभिव्यक्ति दे सकती हैं तो केवल लेखिकाएँ और प्रभा खेतान ऐसा करने में पूर्ण रूप से सफल भी हुई हैं। उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर नारी के विविध संवेदन प्राणवान हो उठे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से विचार और संवेदना के नए धरातल खोले साथ ही उन्होंने स्त्री के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक अधिकारों को दिये जाने की पुरजोर वकालत भी की.....।*

कुंजीभूत शब्द– अनकही, अनबूझी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ, विविध संवेदन, प्राणवान, संवेदना, पुरजोर वकालत, चिंतक।

नारी जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करने वाली, स्त्री–मुक्ति आन्दोलन को गति देने वाली प्रसिद्ध लेखिका, उपन्यासकार, कवयित्री, प्रबन्धकार, स्त्रीवादी चिंतक, विदुषी शोधकर्ता और उद्यमी डॉ. प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में नारी–जीवन की त्रासदी को एक संवेदनशील नारी की दृष्टि से देखा है। उनके निजी जीवन से परिचित हर व्यक्ति उनके विद्रोही, उदार, संघर्षशील और स्वतन्त्रचेता व्यक्तित्व का साक्षी रहा है।

युगीन परिस्थितियों के बदलाव के परिणामस्वरूप उपजी नई विचारधाराओं का प्रभाव संवेदनशील रचनाकार पर पड़ना अवश्यंभावी है। प्रभा जी के चिंतन, सोच एवं सृजन–दृष्टि पर समसामयिक बहुआयामी परिवर्तनों का गहरा प्रभाव पड़ा है, जो उनके साहित्य में जीवंतता के साथ अभिव्यंजित हुआ है। उनके तल्ख तेवर एवं दृष्टि के विकास में निजी जीवन की घटनाओं एवं हादसों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने स्त्री के मानसिक द्वन्द, उसकी दयनीय स्थिति, दैहिक शोषण, आर्थिक असमर्थता, लैंगिक भेदभाव, उपेक्षित होने का दर्द आदि अति संवेदनशील विषयों की बड़ी सूक्ष्मता एवं गहराई से अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दिया है जो उनकी संवेदनशीलता का परिचायक है। प्रभा जी स्वयं एक संवेदनशील नारी और नारीवादी लेखिका रही हैं, फलतः उनके साहित्य में नारी की सूक्ष्मतिसूक्ष्म संवेदनाओं का चित्रण पूरी तटस्थता और ईमानदारी से मुखरित हुआ है। नारीवादी लेखिका होने के नाते उन्होंने स्त्री के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक अधिकारों को दिये जाने की पुरजोर वकालत भी की है।

मानव ह्रदय के भीतर बसी हर्ष, शोक, प्रेम, वात्सल्य की अनुभूति ही संवेदना है। इन कोमल अनुभूतियों का सीधा सम्बन्ध मानव के मन से है। नारी संवेदना, स्त्री के मन में उपजी समस्याओं, दुःखों, कष्टों और आशाओं का बोध कराती है। नये परिवेश के साथ उभरते नारी जीवन की जटिलताओं और कुरुपताओं ने संवेदना के विकास में नयी दिशा दी। इसके अंतर्गत नारी के नए उभरते स्वरूप, वर्जनाओं से मुक्त या संक्रान्तिकालीन एवं संकट से घिरी नारी जीवन का यथार्थ रूप उभर आता है। नारी संवेदना में पुरुषों के अत्याचार से त्रस्त नारी जीवन की पीड़ा को मार्मिकता से उजागर किया जाता है। नारी के इन विविध संवेदनों, उसकी कोमल भावनाओं तथा उसके व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलुओं को प्रभा जी ने बड़ी सूक्ष्मता से अपने साहित्य में उद्घाटित किया है।

प्रभा खेतान नारी के साथ बहुत गहरे जुड़कर चिंतन करती हैं। नारी की आशा–निराशा, उसके सुख–दुःख की बखूबी अभिव्यक्ति उनके साहित्य में देखी जा सकती है। नारी किन–किन धरातलों पर कैसे टूटती और जुड़ती है यदि इसकी सही तस्वीर से रू–ब–रू होना है तो उनके साहित्य का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। उनके अन्दर जो एक साहित्यकार की छटपटाहट थी, उसे उन्होंने अपने लेखन में व्यापकता, गहनता एवं आत्मनीयता के साथ अभिव्यक्ति दी है नारी भावना का समग्र व सजीव चित्रण किया है।

प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में नारी जीवन के विविध आयामों एवं संवेदनाओं को पूरी ईमानदारी से रेखांकित किया है। यह सत्य है कि एक लेखिका नारी के संवेदनाओं और भावनाओं का जितना यथार्थ चित्रण कर सकती है उतना लेखक के लिए सम्भव नहीं है। महादेवी वर्मा का कथन इस बात को अभिपुष्ट करता है–"पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है परन्तु अधिक सत्य नहीं, विकृति के निकट पहुँच सकता है, परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व कल्पना है, परन्तु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।" नारी ह्रदय के प्रेम और व्यथा की कहानी को जितनी सरसता और आकर्षण के साथ नारी लिख सकती है, उतना पुरुष नहीं। नारी स्वयं नारी है, वह नारी के ह्रदय में प्रवेश करके नारी को पढ़ती है, तभी वह

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

नारी स्वभाव और संवेदना का इतना सजीव चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। यह निर्विवाद सत्य है कि स्त्री–पुरुष के मध्य प्राकृतिक जैविक अन्तर होने के बावजूद भी स्त्री की मानसिक शक्ति कला के सृजन में अपना विशेष अर्थ रखती है अपितु कुछ संवेदनाएँ ऐसी होती है जिन्हें पुरुष की तुलना में नारी अधिक प्रामाणिक रूप से व्यक्त कर सकती है।

नारी ह्रदय की कुछ ऐसी अनकही, अनबूझी अनुभूतियाँ एवं संवेदनाएँ होती हैं, जिन्हें यदि कोई सटीक अभिव्यक्ति दे सकती हैं तो केवल लेखिकाएँ और प्रभा खेतान ऐसा करने में पूर्ण रूप से सफल भी हुई हैं। उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर नारी के विविध संवेदन प्राणवान हो उठे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से विचार और संवेदना के नए धरातल खोले। घर–परिवार की व्यथा को अपने कोणों से जाँचा परखा है। नारी की दोयम, सोचनीय स्थिति को उन्होंने पूरी ईमानदारी से व्यक्त किया, हालात से मार खाई नारियों के अदम्य साहस व उनके संघर्ष से उपजे उद्‌भुत जीवन को भी निरूपाय किया है, जिसे पुरुष कथाकार शायद अनदेखा कर जाये। स्त्री–पुरुष के बदलते संदर्भों, नारी के तनावों और छटपटाहट, उसकी द्वन्द्वग्रस्त मानसिकता, मुक्ति की कामना को प्रभा खेतान ने जितनी सूक्ष्म एवं मार्मिक अभिव्यक्ति दी है, वह अन्यत्र दुलर्भ है।

कोमलता की प्रतिमूर्ति नारी दया, सहनशीलता त्याग का दूसरा नाम है, जिसके भीतर न जाने दर्द–वेदना के कितने दरिया बहते हैं, उसके इन तमाम सुखद–दुःखद भावनाओं को वाणी देने में प्रभा खेतान का लेखन निःसंदेह सक्षम हुआ है। घर में और घर के बाहर मेहनत मजदूरी करने वाली स्त्री–जीवन की समस्या, गरीबी, अमानवीय और आचरण भ्रष्ट करने वाले पति के साथ जुड़े रहने की समस्या, असंतुलित विवाह और उसकी नींव में अर्थ की सत्ता एवं उससे उत्पन्न निराशा और कुण्ठा, उसका आक्रोश, कुछ कर गुजरने की आकांक्षा, पीढ़ियों का टकराव, स्त्री की स्त्री द्वारा होने वाली प्रताड़ना और उपेक्षा सभी को प्रभा जी ने बड़े प्रभावी ढंग से एक नवीन कलात्मक रूप में अपनी सरल, सहज भाषा में अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है। महिला होने के नाते नारी मन के पर्तों की अन्तरम् खोज, स्त्री–पुरुष के बीच सूक्ष्म से सूक्ष्म सम्बन्ध और ऐसी संवेदनाओं का चित्रण किया है जो यदि वे न करती, तो वे अनकही, अवर्णित ही रह जाती।

छोटी सी कविता से शुरू हुआ प्रभा का साहित्यिक सफर उत्कृष्टता के साथ लेखन की ऊँचाईयों को स्पर्श करने वाला रहा। प्रभा खेतान की क्रमिक साहित्यिक यात्रा को यदि समग्रता से देखा जाये तो यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका साहित्य किसी एक परिधि में नहीं बँधा। कविता लिखते–लिखते वह चिन्तन की ओर मुड़ी, चिन्तन से फिर काव्य, सम्पादन और तदुपरान्त उपन्यासों की ओर उन्मुख हुईं हैं, परन्तु यह विविधमुखी उन्मुखता कहीं भी उनकी साहित्य–साधना में अवरोधक नहीं बनी है।

प्रभा खेतान की कविता हो या उपन्यास या फिर चिन्तनपरक साहित्य, स्त्री उसके मध्य बनी रही है। जहाँ सदियों से दमित स्त्री का स्वरूप प्रभा के साहित्य में उभरा है तो वहीं आज की सशक्त बनती हुई स्त्री का स्वरूप भी प्रकट हुआ है। लेखिका ने न तो केवल सामाजिक बर्बरता को झेलती हुई कमजोर स्त्री पर चिंतन किया है और न ही कुछ विशेष पदों पर आसीन कुलीनवर्गीय स्त्री पर चिंतन किया, बल्कि उन्होंने तो स्त्री के अस्तित्व, उसकी संवेदना, उसके आत्माभिमान, उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति, घर से बाहर के जगत् में आने वाली बाधाएँ, दैहिक समस्याएँ, मानसिक तनाव और इस सबके बीच अपने वजूद को बचाए रखने के लिए प्रयासरत स्त्री पर चिंतन किया है।

सामाजिक प्रताड़ना को झेलनी वाली प्रभा कविता के सहारे ही असहनीय यथार्थ से पलायन करने में सफल होती थीं। वह कविता को अपनी जरूरत के साथ ही मन की संवेदना को प्रकट करने का एक माध्यम मानती हैं वह लिखती हैं–"कविता लिखना सहज हो जाय यदि हम उसे केवल एक माध्यम माने मन के भावों को प्रकट करने का। जैसे हम आनन्द में सहज नाच लेते हैं, गा लेते हैं वैसे ही कभी–कभी सहज सरल कविताएँ भी लिखी जाती है।..... कविता मेरी जरूरत है..... मेरे व्यक्तित्व की एक अभिव्यक्ति।" प्रभा जी ने किसी भी साहित्यिक महत्वाकांक्षा के लिए साहित्य साधना नहीं की। उन्होंने कलात्मक श्रृंगारिकता से दूर रहकर भावनात्मक ईमानदारी पर बल दिया। अपनी भीतरी तड़प और आवेग को उन्होंने एक प्राकृतिक साँचे में ढाला है तभी तो वह कहती है–"कविता लिखती हूँ क्योंकि मन को एक राहत मिलती है। जीने की एक समझ, दृष्टि को एक तरलता मिलती है..... कविता मेरे लिए एक अन्तःचेतना है–एक भीतर की आवाज.... मैं इसी भीतरी बिन्दु के लिए सजग रहना चाहती हूँ।"

प्रभा खेतान ने छः काव्य संग्रह का सृजन किया, जिसमें लगभग 209 कविताएँ और 'कृष्णधर्मा' (1986ई.) व 'अहल्या' (1988ई.) नामक लम्बी कविता भी शामिल है। प्रभा के आरम्भिक काव्य संग्रह 'अपरिचित उजाले' (1981ई.), 'सीढ़ियाँ चढती हुई मैं' (1982ई.), 'एक और आकाश की खोज में' (1985ई.), उत्तरोत्तर प्रेम, अस्तित्व और उपलब्धियों की परिभाषा को अपनी परिधि में समेट कर चलते हैं। उनकी कविताओं का मूल स्वर प्रेम एवं वेदना है। इसके अतिरिक्त आम आदमी, महानगर, अकेलापन, मानसिक द्वन्द्व आदि उनके काव्य के विषय रहें। उनकी मान्यता है कि कवि के पास तीन मन होते हैं–एक कविता लिखता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

है, एक मन प्यार करता है, और एक मन केवल अपने लिए जीता है। उनका संवेदनशील मन तथाकथित सम्पन्न व्यक्तियों की ओर न मुड़कर हुस्ना, रत्ना, जेनी, अमीतुल्ला जैसे आम आदमी से सम्पृक्त होता है।

उनका काव्य जगत तो स्त्री के जीवन का ही गीत है। उनकी कविताओं में प्यार करती हुई तरुणी, आत्मसम्मान को जागृत करती हुई स्त्री, परम्परागत भूमिकाओं में जकड़ी हुई स्त्री, सुविधाओं के बीच त्रस्त स्त्री, घर का सपना देखती हुई मासूम बालिका, मजदूरी में घटती हुई स्त्री और अपने अस्तित्व की तलाश में निकली स्त्री की चटख तस्वीर उभरकर सामने आती है। 'हुस्ना बानो' नामक कविता में एक किशोरी के जीवन की आशा–आकांक्षा व्यक्त हुई है, जिसके पिता दुबई में शाहों के मकान बनाते गये हैं, परन्तु वे स्वयं बेघर है, यहाँ उसके जीवन की विसंगतियों एवं अकेलेपन की पीड़ा को उभारा गया है। 'कृष्णधर्मा मैं' की स्त्री अपने अस्तित्व की खोज में निकल पड़ती है वहीं 'अहल्या' खण्ड काव्य में तो नारी न सिर्फ अपनी आजादी की आकांक्षा पालती है बल्कि वह तो परम्परा में जकड़ी सीढ़ियों से त्रस्त स्त्री को भी बेड़ियों के घेरे से बाहर आने को जगाती है।

कवयित्री स्त्री के मन पर जमीं दर्द की परत को उतारकर उसे अपने अस्तित्व को पहचानने की क्षमता प्रदान करती हैं– 'उठो! भूल जाओ, दर्द का इतिहास! लगातार पत्थरों का व्याघात तुमने कभी धरती की छाती पर टेढ़े–मेढ़े अक्षरों से टाका था।''

स्त्री–जाति के प्रति संवेदनशील प्रभा खेतान परम्परागत स्त्री को उसके बन्धनों से मुक्त कर उन्मुक्त आकाश में ऊँची उड़ान भरने के लिए स्वतंत्र छोड़ती हैं। उसको उसी के हृदय की परतें खोल कर दिखाती है और भविष्य के सपनों की तरफ मोड़ती हैं। इस प्रकार प्रभा खेतान ने अपने सभी काव्य संग्रहों में जहाँ चौतरफा व्याप्त विसंगतियों व समस्याओं से अपने कविता के विषय चुने हैं वहीं निजी समस्या को भी कविता में स्थान दिया है, साथ ही स्त्री–संवेदना को सशक्त अभिव्यक्ति मिली है और स्त्री में आत्मविश्वास जागृत कर उसे आगे बढ़ाने की संवाहक भी है उनकी कविताएँ। वस्तुतः इनकी कविताओं में विषय की विविधता होते हुए भी स्त्री–जीवन के अन्तर्मन की एक–एक कड़ी बड़ी मार्मिकता से पिरोई गई हैं। उनकी हर एक कविता में नारी स्वतंत्रता का स्वर सुनाई देता है और नारी पीड़ा की विडम्बनाजन्य स्थितियों की सशक्त अभिव्यक्ति भी है।

स्वतंत्रता के बाद नारी को आत्मोन्नति के अधिक अवसर सुलभ हुए। नारी ने भी अपने अस्तित्व की पहचान शुरू की। अब वह घर की सजावट नहीं रही और न ही परम्पराओं से लिपटी हुई आदर्शों की कठपुतली। वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र, भावात्मक रूप से परिपक्व और बौद्धिक रूप से सजग महिला है। आधुनिक नारी के लिए संघर्ष ही यथार्थ है। नारी मन की इन्हीं भावनाओं और संवदेनाओं को प्रभा जी ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया।

अपनी बहुमुखी विचरण की अन्नंत सम्भावनाओं के कारण समकालीन कथा साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली डॉ. प्रभा खेतान ने आठ औपन्यासिक कृतियों की रचना की। जिसमें से अधिकतर उपन्यास उनके निजी अनुभवों पर आध ाारित है, कुछ व्यावसायिकता पर तो कुछ अपने मारवाड़ी समाज के भीतरी घुटन और छटपटाहट को लेकर लिखे गये है। उन्होंने अपने उपन्यासों के केन्द्र में भारतीय नारी को स्थान देकर सदियों से चली आ रही शोषण और अत्याचार की शिकार मारवाड़ी समाज की स्त्री को समाज की सड़ी–गली मान्यताओं से मुक्त ही नहीं कराना चाहा, बल्कि पाश्चात्य नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं से भी परिचित करवाया है। साथ ही स्त्री समाज को आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सबल बनाने का लक्ष्य भी रखा है। प्रभा स्त्री की त्रासदी और विडम्बना, उसकी शोषित स्थिति, उसकी सामाजिक, आर्थिक पराधीनता, सामंती मूल्यों, उसकी भावना एवं संवेदना, रूढ़िगत मान्यताओं और धारणाओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे और साहसपूर्ण ढंग से अपने उपन्यास साहित्य में रखने में सफल हुई हैं।

प्रभा जी के उपन्यास साहित्य (आओ पेपे घर चलें, तालाबंदी, छिन्नमस्ता, अपने–अपने चेहरे, अग्निसम्भवा, पीली आँधी, स्त्री–पक्ष) में चित्रित समस्त नारी पात्र अपने उलझे–टूटे हुए अस्तित्व से मुकाबला कर नये सन्दर्भों की खोज करती हैं। साथ ही अपने आहत हृदय को समस्त बन्धनों, परम्पराओं, सम्पत्ति के दिखावों को झुठलाकर तथा आत्मविश्वास प्राप्त कर नारी संवेदना को नई जमीन प्रदान करती हैं।

'आओ पेपे घर चलें' (1990ई.) उपन्याय में प्रभा जी ने भारतीय एवं पाश्चात्य नारी जीवन की पीड़ा, अपमान और वंचना के भयानक सच को उजागर किया है साथ ही वैश्विक स्तर पर चलने वाली पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय जीवन के आपसी अर्न्तविरोध, पति–पत्नी के टकराहट में टूटते–पिसते बच्चे, भोग–विलास के पीछे अंधी दौड़, आर्थिक समृद्धि के बीच सम्बन्धहीनता और संवेदनशून्यता की पीड़ा का सच्चा चित्रण हुआ है। इस प्रकार उनका यह प्रथम उपन्यास कथा, चरित्र, घटना एवं उद्देश्य के स्तर पर एक संवेदनशील हृदय की धड़कन की तरह स्पंदित हो रहा है।

'तालाबन्दी' (1991ई.) उपन्यास में नारी विषय को अलग से नहीं उठाया गया है, परन्तु कथा–वस्तु के विकास में स्त्री

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

के भावों को अभिव्यक्ति मिली है। चूंकि उपन्यास मानवीय संवेदनाओं के इर्द–गिर्द रचा गया है, अतएव यहाँ स्त्री–पुरुष एक साथ ही खड़े नजर आते हैं, फिर भी रेवा और सुमित्रा के माध्यम से स्त्री संवेदना का स्वर मुखरित हुआ है।

प्रभा खेतान का बहुचर्चित उपन्यास 'छिन्नमस्ता' (1993ई.) स्त्री के शोषण, उत्पीड़न के साथ ही उसके सामर्थ्य की कहानी बयान करता है। उपन्यास नायिका प्रिया एक सफल व्यवसायी महिला की पहचान बनाने में तो सफल होती है, लेकिन उपेक्षित बचपन की पीड़ा उसका कभी पीछा नहीं छोड़ती–''अतीत का ऐसा कोई हिस्सा नहीं जो दर्द से टीस न रहा हो। एक कुचला हुआ घायल बचपन, जो खट से कैशोर्य की दहलीज लाँघकर असमय आ गया और फिर जीने की अंधी जिद लिए हुए निरन्तर संघर्षरत् एक औरत, जो व्यवस्था से समझौता करना कभी सीख नही पाती।'' सम्पूर्ण उपन्यास में नारी शोषण, दमन, घुटन, तनाव, अपमान, जय–पराजय आदि का सजीव चित्रण अति संवेदनशीलता के साथ व्यक्त हुआ है।

'अपने–अपने चेहरे' (1994ई.) उपन्यास में प्रभा ने समाज में स्त्री की यथार्थ स्थिति को व्यक्त किया है। इस उपन्यास में उन्होंने यह दर्शाया है कि विवाह, पति और बच्चे आदि से अलग हटकर भी स्त्री का अस्तित्व है और स्त्री की तलाश मात्र पुरुष नहीं है, उसकी अपनी पहचान भी है। उपन्यास की पूरी कथा रमा की 'दूसरी औरत' होने की पीड़ा, अर्न्तद्वन्द्व और आत्ममंथन की कथा है। इस प्रकार यह उपन्यास स्त्री के मार्मिक भावों एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देता हुआ स्त्री को अपनी जमीन तलाशने के लिए मार्ग निर्देशित करता है साथ ही समाज की थोपी हुई कुंठाओं से उबरने की राह भी दिखाता है।

अपने 'अग्निसम्भवा' (1992 ई.) उपन्यास में प्रभा खेतान ने वैश्विक धरातल पर स्त्री के संघर्ष को मुखर किया है। इस उपन्यास की नायिका आईवी एक चीनी महिला है जो एक मामूली किसान की बेटी है लेकिन वह जीवन से संघर्ष करती हुई हांगकांग की ब्रॉंच मैनेजर बन जाती है। नारी को सशक्त होकर जीना पड़ेगा और अपनी सुरक्षा खुद करनी होगी, ऐसा आइवी का मत है–''नहीं, यदि औरत अपने को नीचे न गिराये तो दुनिया में किसी की हिम्मत नहीं कि उसके कंधों पर हाथ रख दे।'' इस प्रकार सशक्त स्त्री 'अग्निसम्भवा' में घुटती हुई नहीं जीती, वह अपने को तवज्जो देती है। इस उपन्यास मे भी स्त्री की मर्मस्पर्शी भावना मुखर हुई है।

'स्त्री पक्ष' (1999 ई.) पूर्णतया स्त्री के पक्ष को उठाने वाला उपन्यास है। उपन्यास में नायिका वृंदा के माध्यम से नारी–जीवन की स्थिति और त्रासदी का चित्रण किया गया है। इसमें न सिर्फ परिपक्व स्त्री बल्कि उसके बाल–मन की संवेदना को भी प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है। किस प्रकार लड़की को जन्मते ही स्त्री के साँचे में ढाला जाने लगता है, उपन्यास में यह वृंदा के बचपन के चित्रण से स्पष्ट हो जाता है। वृंदा के बाल मन के संवेदन इस प्रकार है–''वह दिलोजान से चाहती थी कि वह अपने पिता के बेहद करीब आए, उनकी दोस्त बने, उनके सुख–दुःख में उसका साझा हो लेकिन पिता, भाई पर ज्यादा ध्यान देते थे, मानों बेटे को ही उनकी गद्दी सम्हालनी है।'' इस उपन्यास में किशोर होती लड़की से लेकर परिपक्व और आत्मनिर्भर स्त्री तक के सफर को बड़ी ही सर्तकता से लिखा गया है। इस प्रकार स्त्री पक्ष स्त्री की पीड़ाओं को व्यक्त करने के साथ ही उसके स्वाभिमान को भी अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देने वाली प्रभा ने 'पीली आँधी' (2001ई.) उपन्यास में समाज में घुटती हुई, सदियों से शोषण की चक्की में पीसी जा रही स्त्री की संवेदना को प्राथमिकता से उठाया है। इस उपन्यास में स्त्री जीवन के प्रत्येक पक्ष को सजीवता के साथ उद्घाटित किया गया है। स्त्री ने प्यार के लिए पारिवारिक संस्था को भी तिलांजली दे दी है। एक विधवा स्त्री की पीड़ा को प्रभा ने कितनी संवेदनशीलता से इस उपन्यास में स्वर दिया है, पद्मावती का भीरू मन यह व्यक्त करता है–''लेकिन मैं विधवा हूँ ना..... सुराणा जी लोग क्या कहेंगे? परिवार मुझे अपनायेगा? मुझे छोड़ दीजिए, सुराणा जी भूल जाइये।'' अतः स्त्री के अर्न्तद्वन्द्व, कुण्ठा आदि को इस उपन्यास मे यथार्थ अभिव्यक्ति मिली है।

हालांकि एड्स (1993 ई.) उपन्यास के केन्द्र में नारी जीवन नहीं है। इसमें एड्स जैसी बीमारी और टूटते योरोपीय समाज की समस्या को उठाया गया है। प्रभा खेतान की सभी रचनाएँ चाहे उसका मूल विषय कुछ भी रहा हो किन्तु स्त्री संवेदना का स्वर सबमें मुखरित हुआ है। कहने को आज स्त्री अपनी बेड़ियाँ तोड़ रहीं हैं, किन्तु अपने आदम भय को वह अब भी बाहर नहीं निकाल पाई है। इसी को व्यक्त करते हुए प्रभा कहती है कि–''आज भी औरत अपने औरतपने की बेड़ियों में जकड़ी हुई है।'' इस उपन्यास में भी स्त्री मन के अर्न्तद्वन्द्व की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रभा का नारीवादी लेखन सदियों से शर्म व हया का झूठ लबादा ओढे प्राकृतिक नारी संवेदनाओं और भावनाओं को बेनकाब कर अपने भीतर की तमाम घुटन को बाहर ला पटकता है तथा पितृसत्ता के दमन चक्र से स्त्री को मुक्त कराना चाहता है।

भूमण्डलीकरण के दौर में नारी की बनती–बिगड़ती स्थितियों पर प्रभा जी ने जो विचार रखे हैं वे अपने–आप में महत्वपूर्ण हैं। मात्र कविता, कहानी या उपन्यास लिखने से ही नारी को व्यक्त नहीं किया जा सकता, नारी संवेदना का पटल

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

अत्यन्त विस्तृत है सारी हकीकत बयाँ करने के लिए प्रभा का चिन्तन–साहित्य, हिन्दी साहित्य जगत् में अपना विशिष्ट महत्व रखता है। प्रभा खेतान के पूरे साहित्य के केन्द्र में स्त्री ही रही है लेकिन उनके चिंतन–साहित्य विशेष रूप से 'उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ' (2003ई.), 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ', 'भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न' (2004ई.), 'स्त्री–उपेक्षिता' (1990ई.), पुस्तक स्त्री सम्बन्धी जो आंकड़े प्रस्तुत करती है वे चौंकाने वाले हैं। सारे तथ्य और आँकड़े प्रभा खेतान के गहन अध्ययन और अथक मेहनत की ओर इशारा करते हैं जो उनके नारी विषयक चिंतन के मूल में है। प्रभा का चिंतन साहित्य स्त्री के सिर्फ एक पहलू की ओर ही नहीं देखता, वह स्त्री को सर्वांग रूप से परिभाषित करते हुए विवेचित करता है और स्त्री के जीवन में आए कुछ सुधारों के साथ आई हुई कुछ कमियों पर भी दृष्टि डालता है। इस प्रकार उनका लेखन आत्माभिव्यक्ति के साथ समय और परम्परा के अन्वेषण का भी प्रयास है। ऐसे लेखन में पूरी परम्परा मान्यता और इतिहासक्रम में समाज और उसके विनियमों के साथ स्त्री अपने नज़र में खुद को समझना चाहती है।

प्रभा जी ने सबसे अन्त में अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' (2007ई.) का प्रकाशन कराया वह अभी और भी रचनाएँ हमें दे सकती थीं, परन्तु यह बड़ा दुःखद रहा कि इस आत्मकथा के प्रकाशन के एक वर्ष पश्चात् ही 2008 ई. में उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। लेखिका कला जोशी ने शोक सन्देह में कहा कि–''वह मसीहा आज हमारे बीच नहीं है, किन्तु इतना अवश्य सत्य है कि जब–जब स्त्री के आँसू लेखनी में ढलेंगे, स्त्री–विमर्श की बात होगी। प्रभा खेतान का वहाँ जरूर जिक्र होगा।'' इस आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन से सम्बन्धित सभी छुए अनछुए पहलुओं का निर्भीकता से वर्णन किया है। उनकी आत्मकथा का मूल स्वर स्त्रीवादी है इसमें लेखिका का अन्तर्द्वन्द्व और जीवन की अर्न्तयात्रा निहित है। इस आत्मकथा में आत्मकथाकार ने अपने जीवन के संवेदना को व्यक्त किया है जीवन का एक–एक कतरा खोलकर रख दिया है, पूरी भावुकता से, निष्पक्ष होकर लेकिन पूरी निष्ठा से। इस पुरुषवादी समाज में एक स्त्री का उपेक्षा भरे धरातल से संघर्षमय सफर, जो उसे न सिर्फ सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाता है, बल्कि इस समाज में पुरुष के बराबर स्थापित करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है प्रभा खेतान का पूरा व्यक्तित्व ही स्त्री जाति के लिए अनुकरणीय है। उनके लेखन में संवेदना एवं चिन्तन की गहराई है, बौद्धिकता है, आधुनिक सांस्कृतिक सामाजिक संजाल में खोई स्त्री अस्मिता की तलाश है।

अतः प्रभा जी का साहित्य इस सत्य को प्रतिपादित करने में तो निश्चित रूप से समर्थ है कि आधुनिक स्थितियों में नारी–जीवन अत्यधिक विडम्बनापूर्ण रहा है, विभिन्न उहापोहों, संवेदनाओं और आकांक्षाओं के क्षितिज से टकराती हुई नारी आज के जीवन की क्रूर विभीषिकाओं में डूबती–तिरती हुई भी अपनी एक पुरुषार्थी, कर्मठ, व्यवहारकुशल किन्तु एक संवेदनशील नारी की छवि प्रस्तुत करने में समर्थ रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा महादेवी–शृंखला की कड़ियाँ, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद चतुर्थ संस्करण, 2004, पृ.सं.90.
2. खेतान प्रभा–अपरिचित उजाले, अक्षर प्रकाशन, प्रा.लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1981, आवरण पृष्ठ।
3. खेतान प्रभा–सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982, पृ.सं.10.
4. खेतान प्रभा–अहल्या, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988, पृ.सं.65.
5. खेतान प्रभा–छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993, पृ.सं.186.
6. खेतान प्रभा–अग्निसंभवा, हंस मासिक (मार्च, 1992–मई 1992), नई दिल्ली, 1992, पृ.सं.63.
7. खेतान प्रभा–स्त्री पक्ष, जनसत्ता सबरंग, (14 फरवरी 1999–19 अगस्त 1999) कोलकाता, 1999, पृ.सं.21.
8. खेतान प्रभा–पीली आँधी, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1999, पृ.सं.282.
9. खेतान प्रभा–एड्स, आज, पूजा वार्षिकांक, कलकत्ता, 1993, पृ.सं.69.
10. वीणा पत्रिका, नवम्बर, 2008, पृ.सं.65.

*****